उदारवाद (LIBERALISM)

उदारवाद के अंग्रेजी अभिप्राय पर्याय 'लिबरलिज्म' की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द लिबरलिस से हुई है जिसका अर्थ है स्वतंत्रता या स्वतंत्र व्यक्ति से संबंधित। यह स्पष्ट कर पाना कि उदारवाद क्या है, बहुत कठिन है क्योंकि यह कोई एक निश्चित विचारधारा नहीं और न ही किसी विशिष्ट विचारक से यह बंधी हुई है। वास्तव में यह एक व्यापक विचारधारा है। उदारवाद के अर्थ को समझने के लिए निम्नांकित वक्तव्यों को समझना आवश्यक है।

1. यह अनुदारवाद का विलोम नहीं है।
2. उदारवाद व्यक्तिवाद का पर्यायवाची नहीं है।
3. उदारवाद तथा लोकतंत्र पर्यायवाची है।
4. उदारवाद लोकतंत्र तथा व्यक्तिवाद का सम्मिश्रण है।
6. उदारवाद सामाजिक कल्याण की उपेक्षा नहीं करता।

उदारवाद के लक्षण

उदारवाद ~~एक क्रमबद्ध और~~ निश्चित विचारधारा नहीं है इसका संबंध न किसी एक युग से है और न कोई सर्वमान्य व्यक्ति विशेष से। उदारवाद के प्रधान सिद्धांत निम्नलिखित है —

1. **सार्वजनिक कल्याण** — उदारवाद में सार्वजनिक कल्याण की भावना निहित है। यह औद्योगिक क्रान्ति से उत्पन्न स्थितियों से मानवमात्र का हित ~~चाहकर~~ चाहकर सबजन सुखाय और सब जन हिताय की भावना को बलवती करता है।

2. **नागरिक स्वतंत्रता** — उदारवाद नागरिक स्वतंत्र

का प्रबल पोषक है। नागरिकों को विधि के द्वारा आवश्यक स्वतंत्रता प्रदान की जानी चाहिए। यह निश्चित विधी की व्यवस्था चाहता है ताकि स्वेच्छाचारी शासन का अन्त हो सके तथा व्यक्ति का विकास तिव्र गति से संभव हो।

3. मानवीय विवेक में विश्वास - उदारवाद बुद्धि एवं विवेक का समर्थक है तथा भावना और विश्वास पर विवेक का अधिकार चाहता है

4. व्यक्ति साध्य और राज्य साधन है - उदारवाद व्यक्ति की गरिमा और प्रतिष्ठा को बनाए रखना चाहता है। समाज और राज्य व्यक्ति के प्रगति के साधन है।

5. सीमित तथा संवैधानिक शासन की स्थापना - उदारवाद का उदय यूरोप में स्थापित निरंकुश राजतंत्रों के विरोध में हुए आंदोलनों से हुआ। इन विचारों ने वहां वैचारिक क्रांति ला दी परिणाम स्वरूप इंगलैंड और फ्रांस में क्रांतियां हुई और धीरे-धीरे अधिकांश देशों में संवैधानिक शासन स्थापित हुए।

6. समाज में क्रमिक परिवर्तन की स्थापना - आधुनिक युग का उदारवाद समाज में क्रमिक परिवर्तन करने की अवधारणा प्रस्तुत करता है। कार्ल पॉपर ने समाज के क्रमिक परिवर्तन की अवधारणा को दार्शनिक आधार प्रस्तुत किया है। उसने इसके सामाजिक निर्माण के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है।

7. आर्थिक स्वतंत्रता - उदारवाद वैयक्तिक संपत्ति का समर्थक है तथा राज्य को आवश्यक कर हीलगना

चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छा अनुसार व्यवसाय करने, सम्पत्ति अर्जित करने और खर्च करने का अधिकार होना चाहिए।

8. रूढ़ियों और परम्पराओं का विरोध - उदारवाद व्यक्ति को प्राचीन रूढ़ियों एवं परम्पराओं का दास नहीं बनाना चाहता है। परम्परा चाहे किसी भी अच्छी हो उनकी अच्छाई का उदारवादी विरोध करते हैं

9. राजनीतिक स्वतंत्रता - उदारवादीयों के अनुसार सरकार का निर्माण और विघटन जनता का अधिकार है सत्ता का अधिवास जनता में होता है तथा जनता को अपने शासक चुनने का अधिकार होना चाहिए

10. लोकतंत्र में विश्वास - आधुनिक उदारवाद अन्य शासन प्रणालियों की अपेक्षा लोकतंत्र को उत्कृष्ट शासन - प्रणाली मानता है।

11. धर्मनिरपेक्ष राज्य का आदर्श - उदारवाद धर्मनिरपेक्ष राज्य की संकल्पना में बहुत श्रद्धा रखता है। राज्य का कोई धर्म नहीं होना चाहिए और व्यक्ति को धार्मिक बंधनों में नहीं बांधना चाहिए।

12. नैतिक और भौतिक आवश्यकताओं में भिन्नता - उदारवाद न केवल नैतिकता पर बल देता है अपितु भौतिक उपलब्धियों को भी आवश्यक मानता है।

13. अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना - उदारवादी विचारधारा के अनुसार विश्व के सभी राष्ट्रों को पारस्परिक सहयोग के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान करना चाहिए। सभी राष्ट्र के उन्नति के लिए समान अवसर मिलना चाहिए।